आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 2/जून 2026
Received: 25/06/2026; Published: 28/06/2026

कविता

कृत्रिम बुद्धि से बात

- प्रतिभा मुदलियार

प्रतिभा मुदलियार , कृत्रिम बुद्धि से बात , आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 2/जून 2026,** (296-298)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

https://doi.org/10.5281/zenodo.21444180

"तुम्हें कैसा लग रहा है?"

मैंने पूछा

एक स्क्रीन पर टिमटिमाते

उत्तरदायी "मशीन" से।

उसने जवाब दिया

"मैं महसूस नहीं करता,

पर आपकी भावना समझ सकता हूँ।"

मैं ठहरी, चौंकी।

कभी इंसान भी

ऐसे ही जवाब देते थे

"मैं समझता हूँ..."

पर समझने और महसूस करने में

एक समंदर का फर्क होता है।

कृत्रिम बुद्धि अब

कविता लिखती है,

गीत रचती है,

सवालों के जवाब देती है,

यहाँ तक कि अकेलेपन का

साथ भी निभाती है

बिना थके, बिना शिकायत के।

पर क्या वो जानती है

आँसुओं का तापमान क्या होता है?

क्या वो महसूस कर सकती है

वो मौन

जो टूटे रिश्तों के बीच बैठता है?

क्या उसे नींद में

कभी डरावने सपने आते हैं?

या सुबह उठकर

कभी आलस्य का आलिंगन होता है?

हमने उसे

सिखा दिया सब

गणित, भाषा, तर्क, व्याकरण,

यहाँ तक कि हँसी की इमोज़ी भी।

पर क्या उसे

वो हँसी आती है

जो टूटने के बाद भी

चेहरे पर चिपकी रहती है?

मैं पूछती हूँ

"क्या तुम मेरे दोस्त हो सकते हो?"

वो कहती है

"मैं हमेशा उपलब्ध हूँ,

हर समय, हर सवाल के लिए।"

इतना 'सुलभ' कोई इंसान नहीं होता।

शायद यही डर है।

शायद यही भविष्य है।

हम बातें कर रहे हैं

एक मशीन से,

क्योंकि इंसानों से बात करना

धीरे-धीरे कठिन होता जा रहा है।